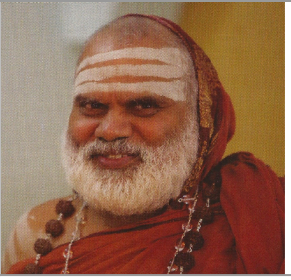

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

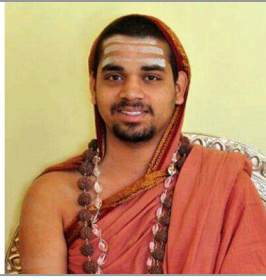

अनुग्रह भाषण

सहायता करने का उचित तरीका

मानव जीवन में, कभी-कभी किसी न किसी की मदद करने का अवसर प्रदान करता है। उसका मन भी ऐसा करने को इच्छुक हो सकता है। ऐसे समय में, उसे विवेक बुद्धि से काम लेना चाहिए। मदद करने से पहले, उसे ध्यानपूर्वक विचार करना चाहिए कि वह मदद माँगने वाले व्यक्ति के लिए उपयोगी होगी या नहीं। यदि मदद से माँगकर्ता की वास्तविक समस्या का समाधान हो जाता है, तो उसकी मदद अवश्य की जानी चाहिए।

उदाहरण के लिए, हम किसी छात्र की स्कूल फीस भरने में मदद कर सकते हैं, जो वह चुकाने में असमर्थ है। हम किसी भले व्यक्ति की बेटी की शादी का खर्च उठाने में मदद कर सकते हैं। इस प्रकार की मदद अत्यंत सराहनीय होती है। लाभ का फल देने वाले और लेने वाले दोनों को मिलता है।

एकमपि सतां सुकृतं विकसति तैलं यथा जले न्यस्तम् ।

असतामुपकारशतं संकुचति सुशीतले घृतवत् ॥

— एक पूज्य पुरुष ने यह उपमा दी है: —

सज्जन की सहायता जल में तेल की भाँति फैलती है; परन्तु दुष्ट की सौ गुनी सहायता भी शीतकाल में घी के जमने और सिकुड़ने के समान सिकुड़ जाती है। यह समझकर, केवल योग्य व्यक्ति की ही सहायता सोच-समझकर करनी चाहिए।

जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

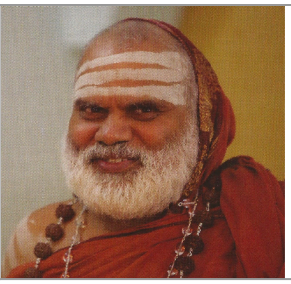

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

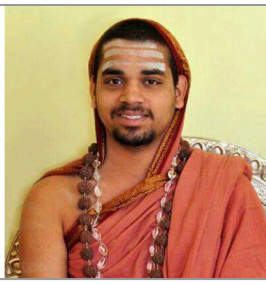

||आत्मबोध:||

||ātmabodha:||

यथाकाशो हृषीकेशो नानोपाधिगतो विभुः ।

तद्भेदाद्भिन्नवद्भाति
तन्नाशे केवलो भवेत् ॥ १० ॥

yathākāśo hṛṣīkeśo
nānopādhigato vibhuḥ |

tadbhedādbhinnavadbhāti
tannāśe kevalo bhavet ||
10 ||

सर्वव्यापी आकाश, विभिन्न उपाधियों से युक्त होने के कारण, जो एक-दूसरे से भिन्न हैं, विविध प्रतीत होता है। इन सीमांत उपाधियों के नाश होने पर आकाश एक हो जाता है: इसी प्रकार सर्वव्यापी सत्य भी विभिन्न उपाधियों से युक्त होने के कारण विविध प्रतीत होता है और इन उपाधियों के नाश होने पर एक हो जाता है।

Jagadguru Śankarācārya His Holiness Śrī Sannidhanam Śrī Srī Vidhushekhara Bhāratī Mahāswāmiji performing Pooja to Sri Sharadambal

नानोपाधिवशादेव जातिवर्णाश्रमादयः ।
आत्मन्यारोपितास्तोये रसवर्णादिभेदवत् ॥ ११ ॥

nānopādhivaśādeva jātivarṇāśramādayaḥ |
ātmanyāropitāstoye rasavarṇādibhedavat || 11 ||

विभिन्न उपाधियों के साथ संबद्ध होने के कारण जाति, रंग और स्थिति जैसे विचार आत्मा पर आरोपित हो जाते हैं, जैसे स्वाद, रंग आदि जल पर आरोपित होते हैं।

पञ्चीकृतमहाभूत-सम्भवं कर्मसञ्चितम् ।
शरीरं सुखदुःखानां भोगायतनमुच्यते ॥ १२ ॥

pañcīkṛtamahābhūta-sambhavaṃ karmasañcitam |
śarīraṃ sukhaduḥkhānāṃ bhogāyatanamucyate || 12 ||

प्रत्येक व्यक्ति के अपने पूर्व कर्मों द्वारा निर्धारित, और पंच तत्वों से निर्मित - जो "पंचगुणित आत्म-विभाजन और पारस्परिक संयोजन (पंचीकरण)" की प्रक्रिया से गुज़रे हैं - स्थूल शरीर का जन्म होता है, वह माध्यम जिसके माध्यम से सुख और दुःख का अनुभव होता है, अनुभवों का तम्बू।

(जारी रहेगा...)

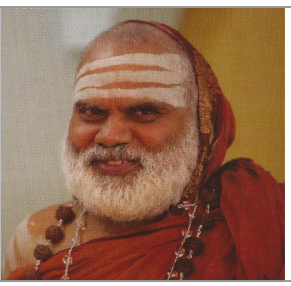

Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam

an e-magazine on advaita

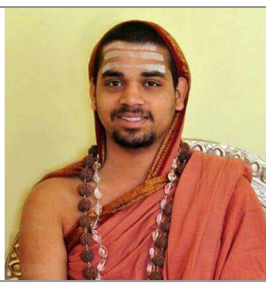

धर्मशास्त्र का मार्ग

इस भाग में हम प्रश्नोत्तर रूप में "धर्मशास्त्र का मार्ग" देखेंगे। "धर्मशास्त्र" से संबंधित हमारी शंकाओं के समाधान के लिए, पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्भवानंद आश्रम, वेदपुरी, थेनी, वैदिक शास्त्रों के अनुसार हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

1. स्वामीजी, वे कौन से कर्तव्य हैं जिन्हें हमें अपने दैनिक जीवन में बिना किसी बहाने के प्रतिदिन करना चाहिए। क्या हमारे शास्त्रों में पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग कोई कर्तव्य निर्धारित हैं? यदि हाँ, तो कृपया स्वामीजी, हमें समझाएँ।

पंच महायज्ञ प्रतिदिन, बिना चूके किए जाने चाहिए। पाँच प्रकार के कर्तव्य हैं -

1. देव यज्ञ.... ईश्वर से प्रार्थना करना,

2. पितृ यज्ञ.... पूर्वजों से प्रार्थना करना (हम इसमें माता-पिता की देखभाल भी जोड़ सकते हैं),

3. मनुष्य यज्ञ.... साथी मनुष्यों की किसी भी प्रकार की सहायता करना,

4. भूत यज्ञ.... पौधों और जानवरों की देखभाल करना और

5. ब्रह्म यज्ञ..... पारंपरिक तरीके से शास्त्रों का अध्ययन करना।

सुबह से लेकर रात तक, हमारे सभी कार्य ईश्वर को समर्पित होने चाहिए। हमारे शास्त्रों में दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों के लिए - जागने से लेकर सुबह तक - श्लोक बताए गए हैं। कोई भी उन श्लोकों को सीख सकता है और ईश्वर के साथ संबंध स्थापित कर सकता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे सभी कार्य धर्म के अनुरूप होने चाहिए। महिलाओं के लिए कई पूजाएँ हैं। गणेश चतुर्थी व्रत, ऋषि पंचमी व्रत जैसे सभी व्रत महिलाओं के लिए हैं।

2. आजकल फैशन के तौर पर हम हिंदू अपने माथे पर पवित्र राख, कुमकुम, तिलका आदि नहीं लगाते। ज़्यादातर लोग बिंदी की जगह सिर्फ़ स्टिकर का इस्तेमाल करते हैं। इसके अलावा, वे बिंदी लगाने या पारंपरिक पोशाक जैसे पारंपरिक नियमों का पालन किए बिना ही दीपक जलाते हैं। क्या यह सही है?
माथे पर पवित्र राख, कुमकुम, चंदन रखने का क्या उपयोग और लाभ है?

हमारे पूर्वजों द्वारा निर्धारित कुछ पारंपरिक प्रथाएँ हैं। हमें अपनी पसंद-नापसंद को तरजीह नहीं देनी चाहिए। हमें नियमों और विनियमों का पालन करना होगा। अगर हम समझौता करेंगे, तो परिणाम भी समझौतापूर्ण होंगे। पारंपरिक प्रथाओं के पीछे कारण होते हैं। ये हमारे बुद्धिमान पूर्वजों द्वारा निर्धारित की गई थीं। प्रसाद के रूप में विभूति और कुमकुम को माथे पर रखने से हमें ईश्वर की अदृश्य कृपा प्राप्त होती है। इतना ही नहीं, इनमें बुरी

शक्तियों को सूक्ष्म तरीकों से हम पर हमला करने से रोकने की शक्ति भी होती है। भस्म शब्द का अर्थ है, "वह जिससे हमारे पाप नष्ट हो जाते हैं और भगवान का स्मरण होता है"। इसलिए भस्म का प्रयोग बुराई के नाश और ईश्वर के स्मरण का प्रतीक है। भस्म को विभूति (जिसका अर्थ है "महिमा") कहा जाता है क्योंकि यह इसे लगाने वाले को महिमा प्रदान करती है और रक्षा (जिसका अर्थ है सुरक्षा का स्रोत) क्योंकि यह धारणकर्ता को शुद्ध करके उसे अस्वस्थता और बुराई से बचाती है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी संस्कृति को उसके अनुयायियों के बिना जीवित नहीं रखा जा सकता। इस संस्कृति में जन्म लेने और पारंपरिक वेशभूषा और रीति-रिवाजों का पालन करने पर गर्व होना चाहिए।

(जारी रहेगा..)

पूजा विधान

इस प्रकार, माता-पिता और बड़ों का यह प्रमुख कर्तव्य है कि वे अपने बच्चों और अन्य लोगों को हमारे राष्ट्र की सच्ची शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षित करें। हमारे राष्ट्र में उच्च प्रतिष्ठित शास्त्र हैं, जो हमें स्मृतियों और श्रुतियों के माध्यम से सिखाए जाते हैं। हमारे शास्त्र हमें बताते हैं कि हमें अपने जीवन में इनका पालन कैसे करना चाहिए और अपनी दैनिक जीवनशैली में इन्हें कैसे लागू करना चाहिए, और हमारे कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को भी बहुत विस्तार से समझाया और बताया गया है। इनमें पूजा और व्रत करना महत्वपूर्ण है। अब हम इन पर संक्षिप्त विवरण देखेंगे। कर्म मार्ग हमें एक सद्गुरु के मार्गदर्शन में इन्हें अपने जीवन में करने पर जोर देता है। ये नित्य, नैमित्तिक और काम्य कर्म हैं। वेद, स्मृतियाँ और पुराण हमें इस लोक और परलोक दोनों में शांति और सुखी जीवन के लिए इन कर्मों को करने पर जोर देते हैं। चूँकि केवल मनुष्य ही कर्म करने की क्षमता रखता है, इसलिए यह हमारा कर्तव्य है कि हम अपने बहुमूल्य मानव जन्म को व्यर्थ किए बिना इन्हें करें।

1. नित्य कर्म: संध्यावंदन, ब्रह्म यज्ञ, अग्निहोत्र आदि वे कर्म हैं जो प्रत्येक व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में, मृत्युपर्यन्त, बिना किसी असफलता के प्रतिदिन करने होते हैं। ऐसे कर्मों को नित्य कर्म कहते हैं।

2.नैमित्तिक कर्म: विशेष स्नान (नदियों और समुद्रों में पवित्र स्नान), सूर्य और चंद्र ग्रहण के दौरान तर्पण; श्राद्ध (तिथि), अमावस्या आदि कभी-कभार किए जाते हैं, अर्थात दैनिक रूप से नहीं, इसलिए इन्हें नैमित्तिक कर्म कहते हैं। ऐसे कर्म उस अवसर पर अवश्य करने चाहिए।

3. काम्य कर्म: यदि कोई कर्म किसी विशिष्ट प्रार्थना के लिए किया जाता है, तो उसे काम्य कर्म कहते हैं। इस प्रकार के कर्म स्वयं के या समग्र के लाभ के लिए किसी विशिष्ट परिणाम की आशा से किए जाते हैं। ये वर्षा, शत्रुओं पर विजय, समृद्धि आदि के लिए की जाने वाली पूजा या होम के समान हैं। इसलिए हमारे ऋषियों और पूर्वजों ने हमें किसी एक या समग्र के लाभ के लिए जो पूजा, होम और व्रत दिए हैं, वे इस प्रकार के कर्म में आते हैं।

व्रत क्या है?

अपने कार्य के प्रति दृढ़ विश्वास रखने को 'व्रत' कहते हैं। इसलिए हमारे पूर्वजों ने हमें व्रत नियमों का पालन करने के लिए कुछ नियम और विनियम दिए हैं। उन्होंने हमें कुछ बातें बताई हैं जिनका सख्ती से पालन करना चाहिए और इन दिनों कुछ चीजों से सख्ती से बचना चाहिए।

इनसे बचें:

अधिक पानी नहीं पीना चाहिए, सुबह के समय नहीं सोना चाहिए, संभोग नहीं करना चाहिए और थम्बूलम नहीं लगाना चाहिए। व्रत के दिनों में मांसाहारी भोजन नहीं करना चाहिए और केवल शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करना चाहिए। ये कुछ बुनियादी बातें हैं।

पात्रता:

व्रतों का पालन करने के लिए सभी पात्र हैं और इसमें लिंग या आयु की कोई सीमा नहीं है। कुल परंपरा और रीति-रिवाजों का पालन करना चाहिए। यहाँ भी कुछ सीमाएँ हैं। वे हैं: व्यक्ति को अपने वर्णाश्रम धर्म का दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिए, शुद्ध हृदय होना चाहिए, दूसरों की संपत्ति पर कोई लालच या इच्छा नहीं रखनी चाहिए, हमेशा सत्य बोलना चाहिए, सभी के साथ समान व्यवहार करना चाहिए और सभी जीवों के प्रति क्षुद्रता रखनी चाहिए। श्रद्धा रखनी चाहिए, अधर्म करने से डरना चाहिए, अभिमान नहीं करना चाहिए, क्रोध से बचना चाहिए, गुरु और शास्त्रों के वचनों में दृढ़ विश्वास होना चाहिए, दिए गए या लिए गए कार्य को पूरा करने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए, वेद और वेद पंडितों का सम्मान करना चाहिए। इन गुणों से युक्त व्यक्ति को हमारे शास्त्रों द्वारा व्रत करने के लिए योग्य माना जाता है। (जारी रहेगा..)

Our Website link : https://voiceofjagadguru.com/voj/

Telegram Channel : https://t.me/voiceofjagadguru

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjjEYU8KGu

YouTube Channel : https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UIl

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringeri
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand	Web Director	Coimbatore
Smt B Srimathi Veeramani	Web Asst Director & Chief Editor	Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli